ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 113-118**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त

डॉ0 अशोक कुमार
एम0ए0, पी–एच0डी0, समाजशास्त्र, ग्राम–निगरी टोला मनिपर, पो०+थाना–डोभी, जिला– गयाजी (बिहार) भारत

Received-14.04.2026, Revised-21.04.2026, Accepted-28.04.2026, E-mail:824220@gmail.com

***सारांशः** माल्थस के विचारों को पूर्णरूपेण समझने के लिए हमें उसके समय की राजनीतिक, बौद्धिक एवं आर्थिक दशा का संक्षिप्त ज्ञान होना चाहिये, क्योंकि इन्ही परिवेशों में यह बना होगा। माल्यस प्रसिद्ध प्रतिष्ठित् अर्थशास्त्रीयों में से एक थे। थागस राबर्ट माल्थस का जन्म इंग्लैड के राकरी नामक स्थान में 1767 ई० में हुआ था। इनके पिता थामस डैनियल माल्थस डेविड ह्यूम तथा प्रसिद्ध दार्शनिक एवं शिक्षाविद् रूसो (Rousseau) के मित्र थे। माल्यस ने सारी शिक्षा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से लेने के बाद धर्मशास्त्र एवं नीतिशास्त्र का विशेष अध्ययन किया। इसके बाद 1797 ई० में वह स्थानीय गिरजाघर (राकरी स्थित) में काम करने लगे और 31 वर्ष की अवस्था में एक छोटे स्थान के पादरी बने। 30 वर्ष की आयु में उन्होनें पहला अप्रकाशित निबन्ध जिसे कि पिट सरकार की आलोचना में लिखा था, लिखा। इसका शीर्षक था, "**The Crisis] a view of the Recent Interesting State of Great Britain.**"1798 में उन्होनें जनसंख्या सम्बन्धित पहला निबन्ध "**An Essay on the principle of Population as it affects the Future Improvement of the Society**"गुमनाम से प्रकाशित कराया जिसका द्वितीय परिशोधित संस्करण 1803 में प्रकाशित हुआ।*

कुंजीभूत शब्द– राजनीतिक, बौद्धिक एवं आर्थिक दशा, विवाहोपरान्त, जीवनपर्यन्त, श्रमिक वर्ग, पूँजीपति वर्ग, दरिद्रता, भूखमरी, निर्धनता।

माल्थस और उसका समय (Malthus and his Time)– 1799 में माल्थस यूरोप का भ्रमण करने के लिए निकल पड़े। किन्तु यूरोप में अशान्ति के कारण सन् 1803 में माल्थस केवल स्वीडन, नार्वे, फिनलैंड तथा रूस की यात्रा करके स्वदेश लौट आये और फिर 1804 में विवाहोपरान्त् 1805 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक कालेज में इतिहास तथा राजनीतिक– अर्थशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त किये गये। इसी पद पर जीवनपर्यन्त कार्य किया।

1820 में नाल्थस की पुस्तक (Principle of Political Economy) प्रकाशित हुई। इनकी कुछ अन्य कृतियाँ भी उल्लेखनीय हैं– Observations on the Effects of the Corn (1814), Laws, Nature and Progress of Rent (1815), जैम Poor Law (1817), Measure of Value (1823), Definition in Political Economy (1827) आदि।

माल्थस के जनसंख्या के विचारों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि उस पर उसकी परिस्थितियों तथा परिवेश का गहरा प्रभाव पड़ा है। यह परिस्थितियाँ क्या थीं? इसके जनसंख्या सम्बन्धी विचारों को समझने के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है।

माल्थस का सारा जीवन घर तथा बाहर की परिस्थितियों से संघर्ष करते बीता। घर में पिता तथा उनके मित्रों के विचारों से मेल न खाने के कारण उसका हमेशा विरोध रहा। बाहर देश में आर्थिक संकट, जनसंख्या– वृद्धि, औद्योगिक क्रान्ति, आदि के कारण व्यापक मूल्य वृद्धि, दरिद्रता, भूखमरी फैली थी जिसने भी माल्थस को प्रभावित किये बिना न छोड़ा। 18 वीं शताब्दी के अन्तिम तीस वर्षों तथा 19 वीं शताब्दी के पहले 20 वर्षों के समय– अन्तराल में इंग्लैड में कृषि उत्पादन में भारी कमी के कारण मूल्यों में वृद्धि तेजी से हो रही थी। देश कम उत्पादन के चक्र से गुजर रहा था तथा लोगों में अकाल का भय बना हुआ था। औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution) भी प्रारम्भ हो चुकी थी। सम्पूर्ण समाज श्रमिक वर्ग तथा पूँजीपति वर्ग में विभाजित हो गया था। पूंजीपतियों ने श्रमिकों का शोषण करना शुरू कर दिया था। बेरोजगारी, निर्धनता, बीमारी, पारस्परिक झगड़े आदि औद्योगिक क्रान्ति के विभिन्न दुष्परिणाम सम्मुख आने लगे थे। शासन तथा निर्धन कानून (च्ववत सूं) ने जनता की आर्थिक कठिनाइयों को और भी अधिक बढ़ा दिया था। थाराल्ड रोजर्स 18वीं शताब्दी के अन्तिम तीन वर्षो में इंग्लैंड की दशा का वर्णन करते हुए लिखते है: "मूल्यों में वृद्धि हुई तथा कम से कम जब यह राष्ट्र लगभग समस्त सभ्य विश्व के साथ युद्ध में रत था तो उसे दुर्भिक्ष के आंतक सहने पड़े। युद्ध की समस्त अवधि में देश बुरी फसलों के उन चक्रों से होकर गुजर रहा था जो अवर्णनीय किन्तु रहस्यमयी ढंग से विघटित होते है।"[1]

इसी प्रकार लोगों को देश की जनसंख्या के बारे में भी भ्रागक ज्ञान था। लोगों को सन्देह था कि आयरलैंड की जनसंख्या अधिक थी। प्रसिद्ध इतिहासकार थागस ग्रीन ने उन दिनों के आयरलैंड का वर्णन करते हुए लिखा है कि "बुरे शासन के परिणामस्वरूप दरिद्रता बढ़ती गई जब तक कि अकाल ने देश को एक नर्ककुण्ड में नही बदल दिया।"[2]

आयरलैंड में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। लगातार कई वर्षों तक फसलें खराब हो गई। इंग्लैंड की दशा युद्धों के कारण शोचनीय थी। भोजन की कमी के कारण अनाज नियम (Corn Law) लागू किया गया।

यही नहीं, जनसंख्या का भी सही अनुमान लोगों को नहीं हो पा रहा था। लोगों को जनाधिक्य पर संदेह होने लगा था। सबसे पहले जनगणना इंग्लैंड में 1801 में हुई। इससे पहले ग्रेगरकिंग, डॉ० रिचर्डप्राइस व हट्टन आदि ने अपनी–अपनी रुचि तथा अव्यावसायिक रूप से जनगणना का यह भार अपने ऊपर लिया था। किंग ने 1696 में परिवार कर अभिलेख और नामकरण व वप्तिस्मा पंजियों के आधार पर यह बताया कि इंग्लैंड की जनसंख्या अनुमानतः पचपन लाख है, जो असाधारण प्रतीत होता था। इन्होनें भविष्य के लिए भी प्रक्षेपित जनसंख्या बताई। इनका मत था कि सम्भवतः आगामी 600 वर्ष अर्थात् 2300 ई. में इंग्लैंड की जनसख्या दुगुनी हो जायेगी और फिर 1200–1300 वर्ष बाद सन् 3500 ई० तक यदि तब तक संसार बना रहा तो इस देश की जनसंख्या 2 करोड़ 20 लाख हो जायेगी।

इसके बाद ही डा॰ प्राइस ने भी अपना अनुमान दिया, जिसको कि लोगों ने अशुद्ध माना, फिर भी जनता का विचार इस भयावह स्थिति में दृढ़ हो गया। इसी से प्रभावित होकर धर्म सुधारक विलियम पाले ने बहुत ही दुःख भरे शब्दों में कहा–"जनसंख्या का घटना राष्ट्र के लिये सबसे ज्यादा हानिकारक है और राज्य शासन का यह कर्त्तव्य है कि दूसरी सब राजनैतिक समस्याओं को छोड़कर पहले जनसंख्या की वृद्धि के उपाय करे।" इसी प्रकार का मत प्रधानमन्त्री पिट–दी–यंगर का भी था जिसके विरोध में माल्थस ने अपना पहला निबन्ध लिखा था, जिसकी चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं। इन लोगों ने यह धारणा इसलिये बनाई थी, क्योंकि डा० प्राइस ने बताया कि जनसंख्या पहले से घटकर रेस्टोरेशन स्थिति में पहुँच रही है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

माल्थस को उपर्युक्त दोनों ही बातों के अलावा समकालीन विद्वानों के विचारों ने भी सोचने के लिये बाध्य कर दिया था। जहाँ बणिकवादियों ने जनसंख्या में वृद्धि को देश को शक्तिशाली तथा सम्पन्न बनाने के लिये उचित ठहराया था वहीं प्रकृतिवादियों ने इसको देश की आर्थिक उन्नति तथा प्राकृतिक आज्ञा मान कर उचित ठहराया। एडम स्मिथ (Adam Smith) के समय औद्योगिक क्रांति के दुष्परिणाम सम्मुख न आने के कारण उनका ध्यान इस ओर विशेष रूप से न गया, फिर भी उन्होंने जनसख्या पर वस्तु की माँग व पूर्ति का सिद्धान्त लागू किया है। एडम स्मिथ (Adam Smith) के ही शब्दों में "जब मजदूरी बहुत नीची होती है तो निर्धनता तथा दुखों के कारण उनमें से अनेकों की मृत्यु हो जाती है, किन्तु जब मजदूरी पर्याप्त रूप से ऊँची होती है तो उनमें से अनेक परिपक्वता प्राप्त कर लेते हैं।"[3] अतः जनसंख्या में कमी तथा वृद्धि भी मनुष्य की स्वार्थ भावना की क्रियाशीलता का परिणाम है।

एडम स्मिथ (Adam Smith) की ही भाँति हेविड रिकार्डो (David Ricardo, 1772–1823) ने भी जनसंख्या पर कोई गलत मत न देते हुये अपने लगान के सिद्धान्त के साथ ही लिखा है कि जनसंख्या वृद्धि से भूमि– प्रधान तथा श्रम– प्रधान दोनों ही देशों में लगान बढ़ जाती है। अन्य देशों के प्रतिष्ठित अर्थशात्रियों मिल जेम्स स्टुअर्ट (1773–1836) ने भी प्रो० स्मिथ की भाँति जनसंख्या को मजदूरी से सम्बन्धित करते हुये लिखा है कि पूँजी और जनसंख्या में समान रूप से वृद्धि न होने से (जनसंख्या की रानि अधि क हो तो) मजदूरी घटती है और लोगों को कष्ट होता है। इसलिये उसने मजदूरी कोष सिद्धान्त को मान्यता दी। रिका के वितरण के सिद्धान्त को भी उन्होंने स्वीकार किया। गिल ने जनसंख्या की तीव्र वृद्धि को मनुष्य की आर्थिक सम्पन्नता में बाधक माना और यह निष्कर्ष निकाला कि "महान् व्यावहारिक समस्या जनसंख्या को सीमित करने वाले साधनों को ढूँढना है।[4]

माल्थस के ऊपर जहाँ एक ओर उसके चारों ओर के परिवेश का प्रभाव पड़ा वहीं वह अपने समकालीन विद्वानों के मत से भी काफी प्रभावित हुआ। सर वाल्टर रैले (Sir Walter Releigh), सर मैथ्यु हेल (Sir Mathew Hale), राबर्ट वेलास (Robert Wallace), जौसफ टाउन्सैण्ड (Joseph Townsend), ह्युम (Hume), आर्थर यंग (Arther Young), मीराव्यू–दी–एल्डर (Merabeau-the-Elder) आदि के विचारों का बड़ा प्रभाव माल्थस पर पड़ा। सर वाल्टर रैले के अनुसार, "जनसंख्या वृद्धि हमेशा आवश्यकता से रहेगी और अतिरिक्त जनसंख्या युद्ध, बीमारियों और भुखमरी से मरती रहेगी।"[5]

माल्थस के विचारों को प्रभावित करने वाले विद्वानों में उसके पिता के मित्र श्री विलियम गाडविन (William Godwin) का नाम प्रमुख है। इस तथ्य को स्वयं माल्थस ने माना है। 1793 ई० में प्रकाशित एक पुस्तक (Enquiry Concerning Political Justice and its Influence on Morals and Happiness) में गाडविन ने तत्कालीन परिस्थितियों की निन्दा की और सरकार को दोषी भी ठहराया तथा भविष्य के बारे में बड़ा ही आशापूर्ण चित्र खींचा। इसमें मनुष्य के दुःख एवं प्रसन्नता के लिये सरकार को जिम्मेदार ठहराया गया है और व्यक्तिगत सम्पत्ति का विरोध किया गया है। वह बढ़ती हुई जनसंख्या से भयभीत नहीं थे क्योंकि उनका यह विश्वास था कि "मानव समाज के नियम या सिद्धान्त जनसंख्या को सदैव उस सीमा से नीचे रखते हैं जितना कि जीवित रहने के साधन हैं।"[6] गाडविन का मनुष्य की पूर्णता में अटूट विश्वास था। गाडविन ने अपनी पुस्तक में एक जगह सुदूर भविष्य का आशाजनक चित्र खींचते हुए लिखा है कि एक समय ऐसा आयेगा जब समाज में न तो एक ओर मुट्ठी भर धनवान होंगे और न ही दूसरी ओर असंख्य निर्धन.....न कभी युद्ध होंगें.....न कोई अपराध...आज की तरह न्यायालयों की जरूरत न होगी और न मानसिक वेदना, न उदासी और न ही क्षोभ की भावना।" इस मत का समर्थन माल्थस के पिता डैनियल माल्थस ने भी किया। किन्तु उन्होंने माल्थस को अपने विचारों को प्रकाशित करने तथा जनता के सामने रखने का सुझाव दिया। माल्थस के जनसंख्या पर लेख लिखने का एक मात्र कारण गाडविन के विचारों का "यद्यपि मनुष्य अमरत्व तो न पा सकेगा परन्तु उसके जीवन काल में अत्यधिक वृद्धि हो सकेगी"[7] विरोध करना था। जिसको उसने अपने निबन्ध की भूमिका लिखते समय इन शब्दों में लिखा है– "यह निबन्ध गाडविन के निबन्ध के विषय पर एक मित्र के साथ वार्तालाप के परिणाम स्वरूप लिखा गया।"

माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की अभिधारणायें (मान्यतायें)–माल्थस ने अपने जनसंख्या सम्बन्धी सिद्धान्त को प्रतिपादित करने के पहले निम्नलिखित तीन मान्यताओं को इसकी आधारशिला माना है:

1. मनुष्य के अस्तित्व के लिये भोजन अनिवार्य है ।
2. स्त्री तथा पुरूष दोनों ही में कामेच्छा (Passion) स्वाभाविक तथा आवश्यक है तथा इसके कारण सन्तानोत्पादन की इच्छा भी यथास्थिर एवं स्वाभाविक है।
3. कृषि में उत्पत्ति हास नियम लागू होता है।

इन्हीं तीन मान्यताओं के आधार पर माल्थस ने यह बताया कि जीवन स्तर वृद्धि के साथ–साथ मनुष्य में सन्तानोत्पादन की इच्छा बढ़ती जाती है और जीवन स्तर में कमी करने पर वह घटती है, तथा "जनसंख्या में वृद्धि करने की शक्ति की भूमि की खाद्य–सामग्री (मनुष्य के लिये) उत्पन्न करने की शक्ति की अपेक्षा अधिक है।"[8] सुविधा के लिये हम जनसंख्या सम्बन्धी विचारों का अध्ययन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत् करेंगे:

जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री में वृद्धि की प्रवृति तथा दर– माल्थस ने अपने सिद्धान्त को समयान्तराल से सम्बन्धित किया। माल्थस ने बताया:

1. यदि जनसंख्या को अनियन्त्रित छोड़ दिया जाये तो इसमें तीव्र गति से बढ़ने की प्रवृति होती है जबकि खाद्य सामग्री में वृद्धि अपेक्षाकृत मन्द गति से होती है।

2. जनसंख्या में वृद्धि की दर के बारे में माल्थस ने लिखा, "अतएव यह सुरक्षित रूप से प्रतिपादित किया जा सकता है कि जब जनसंख्या अनियन्त्रित होती है, प्रत्येक 25 वर्षों के पश्चात् अपने के दुगुना कर लेती है या गुणोत्तर श्रेणी में बढ़ती है।"[9] अर्थात् जनसंख्या में गुणोत्तर श्रेणी के अनुसार बढ़ने की प्रवृत्ति होती है। इस अनुमान के अनुसार प्रत्येक विवाहित स्त्री– पुरुष (औसत परिवार में) कम से कम छः बच्चों को जन्म देते है जिसमें से दो की या तो मृत्यु हो जाती है या फिर वह सन्तानोत्पत्ति योग्य नहीं रहते। शेष चार बच्चे भविष्य में सन्तानोत्पत्ति करते हैं। इस प्रकार 25 वर्षों मे जनसंख्या दुगुनी हो जाती है। माल्थस के द्वारा दी गयी गुणोत्तर श्रेणी इस प्रकार थी: 1—2—4—8—16—32—64—128—256—512—1024...

(3) खाद्य सामग्री में वृद्धि की दर के बारे में माल्थस का विचार था– " अतएव यह उचित रूप से प्रतिपादित किया जा सकता है कि पृथ्वी की वर्तमान औसत अवस्था पर विचार करते हुए मानव उद्योग के लिये अत्यन्त अनुकूल परिस्थितियों में भी जीवन–निर्वाह के साधनों में समान्तर श्रेणी से अधिक तीव्रता से वृद्धि करना सम्भव नही होगा।"[10] अर्थात् खाद्य सामग्री में वृद्धि अधिक से अधिक समांतर श्रेणी (समान्तर श्रेणी में दो पदों का अन्तर बराबर रहता है। जैसे– 1, 2, 3, या 1, 3, 5, 7 या 1, 5, 9 13.... इसमें

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

पहली श्रेणी का अन्तर 1, दूसरी का 2 तथा तीसरी का 4 है।) (Arithmatic Progression) के अनुसार की जा सकती है। यह श्रेणी निम्न प्रकार से कार्य करती हैः 1 — 2 —3 —4 —5 —6 —7 —8 —9---

माल्थस ने खाद्य सामग्री में मन्दगति से वृद्धि होने के कारण कृषि में ह्रासमान प्रतिफल नियम (Law of Diminishing Returns) की क्रियाशीलता को माना। उन्हीं के शब्दों में "जो कृषि विषयों का मामूली ज्ञान भी रखते है उन्हें यह स्पष्ट होना चाहिये कि जिस अनुपात में खेती का विस्तार किया जाता है, तो पिछली औसत उपज में जो वार्षिक वृद्धियाँ की जा सकती हैं, वे धीरे–धीरे तथा निरन्तर घटती जानी चाहिये।"[11] माल्थस ने इस तथ्य को सर्वथा स्वीकार किया है कि जनसंख्या के साथ–साथ भूमि को थोड़ा बढ़ाया जा सकता है तथा श्रम से कृषि योग्य भी बनाया जा सकता है, किन्तु यह कार्य अत्यन्त धीमी गति से होता है।

जनसंख्या तथा स्वाद्य सामग्री का साम्य– माल्थस ने जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री के सह– सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुये एक स्थल पर अपने लेख में लिखा हैः "जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितिय अनुपात में (Geometric Ratio) तथा मानवीय आहार गणितीय अनुपात में बढ़ता है। इसलिये यदि किसी प्रकार बढ़ती हुई जनसंख्या को रोका न जाए तो खाद्य पदार्थों की अपेक्षा जनसंख्या बहुत अधिक हो जाती है।"[12] इसी बात को यदि समय के सन्दर्भ में देखा जाये तो बात इस प्रकार स्पष्ट हो सकती हैः

जनसंख्या 1 — 2, — 4, — 8, — 16, — 32, — 64, — 128, — 256,

खाद्यसामग्री 1 — 2 —3 —4 —5 —6 —7 —8 —9] —10

इस उदाहरण में यदि दो संख्याओं के बीच में 25 वर्ष का समय लगता है, जबकि जनसंख्या अपने की दुगुनी हो जाती है तो पहले पचास वर्षो में जनसंख्या एवं खाद्य समाग्री में सन्तुलन रहेगा तथा प्रति व्यक्ति खाद्य सामग्री की उपलब्धता यथावत् रहेगी, किन्तु जैसे–जैसे समय बीतता है जनसंख्या की तीव्र गति के कारण प्रति व्यक्ति खाद्य सामग्री की उपलब्धता में कमी आने लगती है।

माल्थस के विचार में जनसंख्या एंव खाद्य सामग्री का इस प्रकार का असन्तुलन मानव के लिए अहितकारी ही होता है और इससे उसके जीवन–स्तर में निरन्तर कमी आ जाती है। इस प्रकार दोनों शक्तियों के द्वारा उत्पन्न असन्तुलन में साम्य प्रकृति के द्वारा बनाए रखने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। ऐसा उसने इसलिए कहा था क्योंकि यह असन्तुलन भी तो प्रकृति के द्वारा ही उत्पन्न होता है। मान्थस का विचार था[13] कि "उक्त प्राकृतिक नियम के अन्तर्गत, जिसमें मानवीय जीवन के लिए भोजन को अनिवार्य बनाया है, इन दोनों (जनसख्या तथा खाद्य सामग्री) असमान शक्तियों के प्रभावों को समान रखा जाना चाहिए। चूंकि खाद्यान्न के उत्पादन में आवश्यकतानुसार वृद्धि नहीं की जा सकती है, इसलिए इस असन्तुलन को दूर करने के सन्दर्भ में इन्होंने जनसंख्या निरोधों का उल्लेख किया।

माल्थस को अपने लेख के प्रथम संस्करण के बाद अपनी कमियां महसूस होने लगी थी कि उसके पहले[14] भी लोगों ने इसके दिशा में कार्य कर रखा है। अतः अब उसने अपने निबन्ध के उद्गमनात्मक प्रमाणों के एकत्रीकरण के लिए देशाटन भी किया तथा उसके बाद के सभी संस्करण एक सुव्यवस्थित निबन्ध बन गए। अब उसने श्रेणियों पर आग्रह न करके ऐतिहासिक सामग्री देकर सिद्धान्तों का सहारा लिया जो कि उसके निबन्ध के पहले तथा बाद के सातवें संस्करण की जनसंख्या से सम्बन्धित व्याख्या[15] से देखा जा सकता है।

जनसंख्या निरोध (Checks of Population)– माल्थस के मतानुसार "जो निरोध जनसंख्या को जीवन–निर्वाह के साधनों के स्तर तक सीमित रखते है, वे प्राकृतिक तथा कृत्रिम हैं।"[16] अतः माल्थस के साहित्य में जनसंख्या के दो निरोधों का उल्लेख मिलता है–

क. प्राकृतिक या नैसर्गिक निरोध– ये वे निरोध है, जिनमें मृत्यु–दर को बढ़ा दिया जाता है। जैसेः अकाल, युद्ध, बीमारियां, प्राकृतिक प्रकोप आदि। इनका प्रयोग प्रकृति स्वयं करती है। अत्यधिक निर्धनता, बच्चों का पालन– अत्यधिक परिश्रम, नगरीय जीवन, अस्वास्थ्यकर व्यवसाय आदि को भी गाल्थरा ने प्राकृतिक निरोधों में सम्मिलित किया था। गाल्थरा ने इन्हें कष्ट व नाग दिया क्योंकि भूखा व्यक्ति्त नर– हत्या, बाल– हत्या, वृद्ध हत्या आदि बहुत से बुरे कार्यों के करने को उद्यत हो जाता है ।

ख. कृत्रिम निरोध– ये वे निरोध हैं जिनके द्वारा जन्म–मृत्यु को घटाते हैं जैसे दुराचार एवं संयम। इस प्रकार के निरोध का प्रयोग मनुष्य द्वारा स्वयं किया जाता है। गाल्थस ने इन प्रतिबन्धक निरोधों को दो भागों में विभाजित किया है–

i. **नैतिक या आत्म–संयम–** इसमें वे निरोध सम्मिलित हैं, जिनका सम्बन्ध मनुष्य के नैतिक आचरण से है।[17] जैसे विवाह देर से करना, सन्तानोत्पादन की इच्छा से दूर रहना आदि। व्यावहारिक रीति के रूप में माल्थस ने यह सुझाव रखा था कि जनसंख्या बढ़ाने में लोगों को हतोत्साहित करना चाहिए। उनसे अनुरोध किया जाना चाहिए कि ये संयम से रहें। उन्होंने स्त्रियों से विशेष रूप में अनुरोध किया कि वे 27–28 वर्ष तक विवाह न करें (चाहे पुरुषों को कितनी ही, माल्थस के शब्दों में, तकलीफ क्यों न हो) ।

'संयम' से माल्थस का तात्पर्य था, "विवाह का परिवर्जन" जिनका अनुकरण विश्रृंखल भोग से न किया जाए। वे नवदम्पत्ति को संयम के रूप में 'आशीर्वाद' देने के पक्षपाती थे। वे गरीबों को किसी भी प्रकार की राज्य द्वारा दी जाने वाली सहायता के कट्टर विरोधी थे। उनका विचार था कि गरीब स्वयं अपनी गरीबी का उत्तरदायी है। न तो समाज, न मजदूरी और न ही ईश्वर उनकी गरीबी का कारण है। वे गरीब बसेरे (Poorlodge) को समाप्त कर देने के हिमायती थे। उन्होंने गरीबों के बारे में लिखा है कि– "जब ईश्वर दण्ड देता है तो हमको उसके हाथ से डण्डा खींच कर उसके प्रकोप का भागी नहीं बनना चाहिए।" आगे उन्होंने फिर कहा कि वे लोग ऐसे व्यक्ति हैं जो कि जिन्दगी के जुए में खाली हाथ है।

ii**. पाप (Vices)–** इसमें माल्थस ने उन उपायों को सम्मिलित किया जिनसे सन्तानोत्पत्ति रोकी जा सकती है, जैसे वेश्यावृति, मिश्रित समागम, अनैतिक कार्य, कान्ट्रासेप्टिव्स का प्रयोग आदि ।

माल्थस चूंकि एक पादरी था और सभी चीजों को नैतिकता तथा धार्मिकता की तराजू पर तोलता था। इसलिए उसने सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टिकोण से जनसंख्या को रोकने के लिए प्रतिबन्धक रोक को अधिक अच्छा माना । इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है किकृ"जैसा कि प्रकृति के नियमों से प्रतीत होता है, जनसंख्या पर रोक लगाई जानी चाहिए, यह उत्तम होगा यदि ऐसी रोक परिवार की कठिनाइयों तथा निर्धनता के भय की दूरदर्शिता से लगाई जाए न कि वास्तव में कमी या बीमारी के आ जाने पर। ईसाइयों से मैं कहूँगा कि धार्मिक ग्रन्थ स्पष्ट रूप से बता रहे हैं कि हमारा यह कर्तव्य है कि हमें अपनी वासनाओं की वृद्धि को सीमाओं में नियन्त्रित रखना चाहिए। यदि हम अपनी वासनाओं की पूर्ति इस ढंग से करते हैं जिसके बारे में विवेक हमें बतलाता है। कि अन्त में यह हमें कष्ट की ओर ढकेल देगा तो इस नियम की प्रत्यक्ष अवज्ञा (उल्लंघन) होगी।[18]

माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए अन्य विधियों पर भी प्रकाश डाला है। इसके अन्तर्गत गर्भपात, गर्भ निरोधी विधि यों के प्रयोग आदि आते है। परन्तु माल्थस ने इन विधियों को ठीक नहीं बताया है क्योंकि उनके कथन से स्पष्ट है कि "वास्तव

में मैं विशेषतया सदैव ही कृत्रिम तथा अप्राकृतिक जनसंख्या को रोकने की विधियों को अपनाने के पक्ष में नही था । संयम, जिसको मैने बतलाया है, बिल्कुल ही एक अलग स्वभाव का है।"[19]

सिद्धान्त की समीक्षात्मक व्याख्या– माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी विचारों की प्रंशसा माल्थस के अनुयायियों के अतिरिक्त कोसा, मार्शल, ऐली, टॉजिंग, कारवर, पैटन, प्राइस, वोल्फ, क्लार्क तथा वाकर आदि विद्वानों तथा अर्थशास्त्रियों ने की। जीड तथा रिस्ट के विचारानुसार माल्थस ने ठीक उसी प्रकार सलाह दी जिस प्रकार एक हितेषी तथा स्पष्टवादी चाचा अपने भतीजे तथा भतीजियो को सलाह देता है। माल्थस ने गानव जाति को अधिक कष्ट तथा दुःख से बचने कि लिए काम वासना के दुष्परिणामों के प्रति सचेत किया, इनके सिद्धान्त के समर्थन में क्लार्क लिखते हैं "गाल्थरा के जनसंख्या सिद्धान्त का इतना अधि क खण्डन किया गया है कि जिससे इसकी पुष्टि ही होती है।"[20]

माल्थस के सिद्धान्त की जहां पर इतनी भूरि–भूरि प्रशंसा की गई, वहीं इसकी आलोचना भी कम नहीं हुई। माल्थस के सिद्धान्त की उत्पत्ति मानव तथा जमीन की उत्पादन क्षमता के कारण होती है। कैगन, गाडविन, निकलसन, माम्बर्ट, इनग्राम, अपनहीम, हक्सले आदि माल्थस के कटु आलोचक थे। माल्थस के लेख प्रकाशित होते ही गाडविन ने प्रतिक्रियास्वरूप विरोध में आलोचना करते हुए लिखा कि "वह काला तथा भयानक राक्षस जो सदैव मानवता की आशाओं का संहार करने के लिए तैयार है।"[21] तभी से माल्थस द्वारा कहे गए प्रत्येक शब्दों की कड़ी आलोचना की गई। प्रो. ग्रे. अलेक्जेण्डर ने तो यहां तक कहा है कि–"यह बात सरलता से कही जा सकती है कि अभी तक किसी प्रतिष्ठित नागरिक का न तो इतना अनादर किया गया और न ही इतने अपशब्द कहे गए, जितने कि माल्थस के लिए, प्रथम श्रेणी के लेखकों में से किसी का भी खण्डन इतना अधिक नहीं किया गया।"[22] इस सिद्धान्त के विरूद्ध मुख्यतः निम्न आरोप लगाए गए हैं:

1. कामेच्छा तथा सन्तानोत्पत्ति की इच्छा में अन्तर– सर्वप्रथम माल्थस ने कामेच्छा तथा सन्तानोत्पत्ति की इच्छा को एक समझ लिया था, जबकि दोनो इच्छायें एक–दूसरे से भिन्न है। कामेच्छा तो भूख, नींद, प्यास आदि की भांति एक मूल प्रवृति है, जिसको कि सामान्यता किसी भी प्रकार समाप्त नहीं किया जा सकता है जबकि सन्तानोत्पत्ति की इच्छा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि विचारों और परिस्थितियों से प्रभावित होती है। वर्तमान समय में कृत्रिम गर्भ निरोधक उपायों ने इन दोनो के अन्तर को और भी स्पष्ट कर दिया है। प्रो० जे० के० मेहता के विचार इसकी और भी अधिक पुष्टि करते है, "फलतः वह इन दोनो प्रकृतियों में भ्रमित हो गया, जबकि कामेच्छा जनासाधारण में बहुतायत से पाया जाता है और इसको प्रतिबन्धित नही किया जा सकता। उसने इस गुण को सन्तानोत्पत्ति की इच्छा से जोड़कर भूल किया।"[23]

2. जनसंख्या की ज्यामिति सम्बन्धी धारणा गलत है। माल्थस की यह मान्यता कि जनसंख्या गुणोत्तर श्रेणी में बढ़ती है, प्रायः विभिन्न देशों के ऐतिहासिक सर्वेक्षण के आधार के अनुसार गलत सिद्ध हुआ। उसका यह सिद्धान्त केवल उसी दिशा में ठीक उतरता है, जबकि यह मान लिया जाए कि प्रत्येक परिवार में उत्पन्न होने वाले बच्चों की संख्या छः हो। किन्तु जिन देशों में परिवार नियोजन कार्यक्रम लागू होगा वहां यह नियम गलत सिद्ध होगा और यह दर सामान्यता बहुत ऊँची है। इसी प्रकार का मत प्रो. हक्सले का है कि जन्म–दर जितनी ऊँची होगी मृत्यु दर भी उतनी ही ऊँची होगी।

3. माल्थस का मत है कि जनसंख्या प्रत्येक 25 वर्ष में अपनी की दूनी हो जाती है, गलत है। बल्कि यह 33 वर्ष के अन्तराल पर दूनी हो जाती है। शरीर क्रियात्मक तर्क इस प्रकार के तर्क देते हैं कि प्रत्येक दो पीढ़ी का अन्तर 33 वर्ष का होता है। इस समयावधि की वृद्धि से जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी अवश्य पड़ जाती है, परन्तु इसके ज्यामितिक अनुपात पर कोई प्रभाव नही पड़ता है। इसी प्रकार का उदाहरण एडम स्मिथ के साहित्य में भी मिलता है। उसने बताया कि पहाड़ी स्त्रियाँ प्रायः 20 बच्चे पैदा करती हैं, किन्तु उनमें से केवल दो ही अपनी वैवाहिक स्थिति में पहुँच पाते है। प्रो० जीड ने लिखा है कि "कीटाणुओं में जनसंख्या बढ़ाने की अधिक शक्ति होती है, लेकिन उसकी संख्या में आवश्यक वृद्धि के साथ अधिक जनसंख्या नष्ट भी होती रहती है, जिसमें जीवनरूपी तालाब सदैव एक औसत ऊँचाई तक भरा रहता है और मृत्यु द्वारा कमी नए जन्मों द्वारा पूरी होती रहती है।"[24]

4. माल्थस द्वारा लगाया गया खाद्य सामग्री का अर्थ अत्यन्त संकीर्ण था। उन्होंने खाद्य सामग्री में केवल कृषि उपज को ही सम्मिलित किया जबकि वनस्पति फल–फूल तथा मांस–मछली आदि को भोजन में सम्मिलित किया जाता है। इनका मत था कि खाद्य–सामग्री में वृद्धि गणितीय श्रेणी के अनुसार होती है, जबकि इसमें वृद्धि अन्य वस्तुओं के उपयोग से की जा सकती है। प्रो० कैनन, जो कि माल्थस के कटु आलोचकों मे से एक थे, ने लिखा है कि "माल्थस ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से गणित की सर्वश्रेष्ठ उपाधि प्राप्त की तथा यह उसके गणितात्मक सूत्रों से प्रति स्नेह को प्रदर्शित करता है। उसने इन गुणोत्तर व समानान्तर अनुपात को बहुत महत्व दिया। यद्यपि उसके क्षमा की प्रार्थना करने वाले ही इसके विपरीत विश्वास रखते हैं।"[25]

5. माल्थस ह्रासमान प्रतिफल नियत की प्रकृति को न समझ सके। उन्होंने अपना सिद्धान्त इस तर्क पर आधारित किया कि भूमि की यह विशेषता हे कि खेती में श्रम तथा पूंजी की अतिरिक्त इकाइयाँ लगाने से उत्पादन में वृद्धि घटते अनुपात से होती है । किन्तु वर्तमान युग में रसायनिक खाद, यान्त्रिक प्रणाली, सिंचाई के उत्तम साधन, श्रम विभाजन, परिवहन के उन्नत साधन आदि ने कृषि उत्पादन में कई गुना वृद्धि को सम्भव बना दिया है। मनुष्य द्वारा कृषि–क्षेत्र में की गई इस अद्भुत उन्नति का माल्थस अनुमान न लगा सके। हैने लिखते हैं, "वह जानते थे कि क्या हुआ, उन्होंने देखा कि क्या हो रहा था, किन्तु अपने परिस्थान से प्रभावित होने के कारण भविष्य के प्रति उनकी दृष्टि अनुचित रूप से अस्पष्ट थी।"[26]

6. प्रो० कैनन ने माल्थस के इस मत का खण्डन किया कि जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। अपने तर्क की पुष्टि में इंग्लैंड का उदाहरण देते हुए लिखते है कि वहाँ की भूमि बहुत कम जनसख्या का भरण–पोषण कर सकती है। फिर भी माल्थस द्वारा बनाये गये प्रकोपों को वहाँ शायद ही कभी देखा गया हो। इतना ही नहीं, इंग्लैंड के निवासी विनिर्मित वस्तुओं के निर्यात के बदले खाद्य सामग्री का आयात करके भी अनेक कृषि–प्रधान देशों के नागरिकों से अधिक समृद्ध तथा प्रसन्न है।

7. माल्थस का अनुमान– कि बिना किसी रोक के जनसंख्या असीमित मात्रा में बढ़ती हैः ऐतिहासिक कसौटी पर खरा नहीं उतरता है, अपितु औद्योगीकरण के साथ–साथ जन्म दर में कमी दिखाई पड़ती है और रहन–सहन का स्तर भी ऊँचा होता जाता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप के राष्ट्र हैं। इन राष्ट्रों के जीवन स्तर में जहाँ एक ओर वृद्धि हुई है वहाँ गरीबी भी एक हद तक अधिक मात्रा में कम हुई है। आज लोग बच्चें की अपेक्षा भोग–विलास की वस्तुयें अधिक पसन्द करते हैं। जीड और रिस्ट के शब्दों में, 'इतिहास ने उसके डर की निश्चित रूप में पुष्टि नहीं की है। किसी एक देश ने यह नहीं दिखाया कि वह अल्जिनसंख्या से पीड़ित हो! कुछ स्थानों में, उदाहरणार्थ फ्रांस में, जनसंख्या में बहुत ही कम वृद्धि हुई हैं। दूसरे देश में वृद्धि बहुत ही

अनुमानजनक है परन्तु कहीं भी वह धन से अधिक नहीं बढ़ी है।"[27] अतः मनुष्य सदैव ही वृद्धि की कामना नही करता बल्कि जीवन स्तर अच्छा उठाना चाहता है।

8. आलोचकों का मत है कि शिशु अपने साथ एक मुँह तथा दो हाथ लेकर जन्म लेता है। एक मुँह की क्षमता से कही अधिक दो हाँथ उत्पादन कर लेते हैं। अपने सम्पूर्ण जीवन के कुछ ही वर्षो तक उसके हाँथ उत्पादन कार्य करने में अयोग्य होते है।, परन्तु अधिक जीवन तक उससे उत्पादन कार्य करते है। इससे अधिक जनसंख्या से श्रम विभाजन होता है तथा बड़े पैमाने पर उत्पत्ति करने को प्रोत्साहन मिलता है।

9. जनसंख्या सामाजिक उद्देश्यों की भी समस्या ळेः माल्थस की आलोचना करते हुए प्रो. सेलिगमैन लिखते है कि अनुकूल परिस्थितियों में जनसंख्या का धीरे–धीरे तथा धन का तेजी से बढ़ सकना सम्भव है। जनसंख्या की समस्या केवल आकार की समस्या नही है, वरन् वह कुशल उत्पादक तथा न्यायपूर्ण वितरण की भी समस्या है।"[28]

इसी सम्बन्ध में डा० ज्ञान चन्द्र ने लिखा है कि जनसंख्या की समस्या खाद्य सामग्री की प्राप्ति तथा जनसंख्या के सम्बन्ध अथवा प्रति व्यक्ति आय की समस्या नहीं है, परन्तु यह उस सामाजिक, नैतिकता तथा जीवन स्तर की समस्या है जिसकी समाज अपने सदस्यों के लिए अपेक्षा करता है।[29]

10. माल्थस ने लिखा था "निर्धन व्यक्तियों की दरिद्रता का कारण वे स्वयं है।"[30] काल मार्क्स तथा अन्य समाजवादी लेखकों ने इस तर्क की घोर निन्दा की है। यह कहकर माल्थस ने गरीब व्यक्तियों को वैवाहिक सुख से वंचित रहने का उपदेश दिया जो कि इन व्यक्तियों के प्रति घोर अन्याय था। दरिद्रता के लिए जनाधिक्य नहीं, बल्कि प्राकृतिक व मानवीय साधनों का अनुचित तथा अपूर्ण उपभोग, आयु का असमान वितरण, सरकार की दोषपूर्ण नीति आदि बातें उत्तरदायी होती हैं।

11. माल्थस ने अपने सिद्धान्त के प्रतिपादन में आगमन– का प्रयोग किया है अर्थात् इन्होंने अपना निष्कर्ष कुछ ही राष्ट्रों के जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़ों के अध्ययन पर आधारित किया। शायद यहीं इनके निष्कर्षो का कारण हैं।

12. कृत्रिम उपायों की उपेक्षा– माल्थस ने जनसंख्या को रोकने के लिए नैतिक उपायों पर अधिक बल दिया है। इसके साथ ही साथ कृत्रिम उपायों की उपेक्षा की है। माल्थस के आलोचकों ने इस बात पर अधिक जोर दिया कि यह स्वयं एक ही तथ्य आत्मसंयम पर ही पादरी होने के नाते बल दिया हैं।

सर विन्स्टन चर्चिल ने "सभी वृक्ष प्रारम्भ में ज्यामितिक अनुपात में बढ़ते हैं, किसी भी को वृक्ष आकाश को छूते नहीं देखा गया। इसी प्रकार की दशा जनसंख्या पर भी लागू होती है।" तथा हेनरी विलार्ड[31] ने अमीबा" के प्रत्येक घण्टे में दो हो जाने का उदाहरण देकर" गाल्थस की कटु आलोचना की।

माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचनाओं को स्वीकार करते हुए हैने लिखते हैं कि "निःसन्देह माल्थस की कुछ कमियाँ क्षम्य है क्योंकि ये उनके कथन को सूक्ष्म तथा प्रभावशाली बनाने के प्रयास में हुई हैं जो उनके सिद्धान्त को गलत समझने का एक कारण माना जा सकता है।"[32]

माल्थस चाहे आज विकसित देशों की दशा में सही न उतर सके, किन्तु अविकसित देशों मे यह सिद्धांत अजर और अमर रहेगा। जहाँ तक गुणोत्तर श्रेणी तथा गणितीय श्रेणी का प्रश्न है, जनसंख्या में हमेशा खाद्यान्न की अपेक्षा तीव्र वृद्धि होगी। यह एक ध्रुव सत्य होगा। इस दिशा में लेखक प्रसिद्ध विचारक बर्ट्रेन्ड रसेल के इस मत से पूर्ण रूपेण सहमत है किः "माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत उसके लिखने के समय तक बहुत ही ठीक था अब भी जंगली व अर्द्ध सभ्य जातियों में निम्न कोटि के मनुष्य के लिए सत्य है। "क्योंकि कोई भी व्यक्ति साधारणतया जीवन–स्तर में वृद्धि के लिए जन्म निरोध नहीं करता है।" माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी अन्य विचार माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि तथा खाद्यान्न–वृद्धि के अलावा अन्य पक्षों जैसे प्रवास, विशिष्टीकरण, समाज कल्याण आदि पर भी अपने विचार व्यक्त किये हैं।

1. प्रवास– माल्थस ने जनसंख्या के देशान्तरण को देश के विकास के लिए आवश्यक माना। उसका मत था कि व्यक्ति जब स्वदेश त्यागकर विदेश जाता है तो इसके कई दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन परिणाम देखे जा सकते है। एक तो स्वदेश से जनसंख्या भार कम हो जाता है जिससे भोजन सामग्री आदि की कमी की समस्या थोड़े समय के लिए स्वतः ही हल हो जाती है। इसके कारण किसी देश की गरीबी अल्पकाल के लिए अवश्य ही दूर हो जाती है। फिर ज्योंहि लोगो के रहन–सहन के स्तर में वृद्धि होती है, लोग विवाह आदि जल्दी–जल्दी करते है तथा जन्म– दर अधिक होती है तथा गरीबी दूर होते ही मृत्यु – दर की भी कमी होने लगती है, जिसके कारण जनसंख्या पुनः बढ़ने लगती है। माल्थस के ही शब्दों मेंः "यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि जनसंख्या में कमी करने या उसे रोकने के लिए उत्प्रवास पूर्णरूपेण पर्याप्त नहीं है, किन्तु यह केवल आंशिक रूप एवं अस्थायी निदान है जिसका प्रयोग अधिक से अधिक खेती करने तथा वृहत् रूप मे सभ्यता के प्रसार के लिए किया जा सकता हैं और यदि इस दिशा में सरकारी कदम न उठाये गये तो यह एक असफल विधि होगी। जनसंख्या के ह्रास के अलावा उत्प्रवास का कोई भय नहीं है।"[33]

2. विशिष्टीकरण– माल्थस का मत था कि कोई देश किसी सीमा तक कृषि तथा अन्य बनी वस्तुओं के क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त कर सकता है। ऐसा करके वह जनसंख्या के बड़े हिस्से का पालन–पोषण उन देशों की अपेक्षा, जहाँ विकास नही हुआ है, खाद्यान्न का आयात करके अधिक कुशलता से कर सकता है। राष्ट्र अपने विशिष्टीकरण की प्राविधियों में तभी तक सफल हो सकता है, जब तक दूसरा देश इसका प्रतिस्पर्धी न हो। ऐसा करके वह पूंजी आदि एकत्रीकृत करके अन्न का आयात तथा निर्मित वस्तुओं का निर्यात करने में सफल हो पाता है। माल्थस ने इसे बड़े ही सुन्दर शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया हैः "वह देश, जो कि व्यापार एवं निर्माण में विशिष्टता प्राप्त कर चुका है, दूसरे देशों से विविध प्रकार के खाद्यान्नों का आयात करके बढ़ती हुई जनसंख्या को बनाये रखने में तब तक सफल हो सकता है, जब तक कि जिस देश से आयात कर रहा है वह पूर्णरूपेण खेती में तल्लीन न हो जाये। ऐसे देशों में जनसंख्या अवरोध के निमित्त खाद्यान्नों के कम पूर्ति तब तक नही हो सकती जब तक कि विभिन्न आयु वाले कुछ लोग न समाप्त हो जायें।[34]

3. समाज कल्याण– लोगों को ऐसा मत है कि अदूरदर्शी व्यक्तियों की मृत्यु–दर दूरदर्शी, चतुर एवं प्राज्ञ व्यक्तियों की अपेक्षा गाल्थस के दिनों में आज की अपेक्षा अधिक देखी जाती थी। इस प्रकार से इन दिनों प्राज्ञ तथा अदूरदर्शी व्यक्ति के बच्चों की युवावस्था पहुँचने की संख्या लगभग समान रहती थी। इसको शायद माल्थस ने दो वर्गों में जन्म–दर की गणना करके सिद्ध कर दिया था। इसलिए माल्थस को गरीबों को दान देना नहीं सुहाता था और उसने इसका विरोध किया। इसके विरोध करने का कारण यह था कि इसके अदूरदर्शी 'दरिद्रो' में, जो स्वतः ही अपने पैर में कुल्हाड़ी मारते हैं तथा दान पर निर्वाह करने वालों की संख्या में वृद्धि

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

होगी। उनका मत था कि ये सिसीफल नरेश के श्रमिक[35] की भाँति है, जिनका की कोई ओर–छोर नही है। इसलिए शुरू में ही इनको समाप्त कर देने से बाद की बर्बादी से मुक्ति मिलेगी।

माल्थस ने कहा कि "आवश्यक एवं स्थायी रूप से इन गरीबों की अवस्था में सुधार करना हो इनकी अवस्था का इन्हें पूर्ण ज्ञान करा दिया जाये।"[36] इसीलिए वह इसको तुरन्त समाप्त करने के पक्ष में था और बदले में राष्ट्रीय शिक्षा का विस्तार करना चाहिए, जिसके द्वारा जनता सीमित परिवार की आवश्यकता अनुभव कर सके। इस सीमित परिवार का आकार उसके पास उपलब्ध साध नों के आधार पर निर्धारित होना चाहिए। उसने इसके अलावा कोई और उपाय न देखा, क्योंकि पूर्णतावादियों तथा संस्कारवादियों की सारी विधियाँ गरीबों के उत्थान के लिए असफल हो चुकी थी।

इस प्रकार जनसंख्या को वैज्ञानिकता एवं वृहत् सिद्धांत का रूप देने का श्रेय सर्वप्रथम माल्थस को है। जनसंख्या के परिणामों का वृहत् विवेचन माल्थस ने अपनी पुस्तक तथा निबन्ध में किया है जो कि एडम स्मिथ की पुस्तक का प्रत्युत्तर है। जीड और रिस्ट के शब्दों में "एक शताब्दी के बीत जाने के बाद भी उस वादविवाद की प्रतिध्वनि अभी तक समाप्त नहीं हुई है जो इस सिद्धांत ने उत्पन्न की है। माल्थस की पुस्तक एडम स्मिथ को पुस्तक का प्रत्युत्तर है।"[37]

References

1. Thoraid Rogers - Introduction to Adam Smith's Wealth of Nations.
2. T. Green: "Short History of the English People", p. 788.
3. Aannan : Wealth of Nations, Book-1, Fol. 1, p. 81.
4. James Mill : "Elements of Political Economy". p-51.
5. R. Smith: "The Malthusian controversy (1951), P-09.
6. Godwin: "Enquiry Concerning Political Justice and its influence on Morals and Happiness.
7. Ibid.
8. Malthus : An Essay on the principle of population as it Affects Future improvement of Society."
9. Ibid.
10. Ibid.
11. Ibid.
12. Ibid.
13. Ibid.
14. Thompson and Lewis : "Population problem", p-23, First Edition.
15. Ibid.
16. Malthus : "An Essay on the principle of population as it affects future and improvement of Society."
17. Ibid.
18. Ibid. pp. 24.
19. Ibid.
20. Clark.
21. Godwin.
22. A gray.
23. J.K. Mehta.
24. Gide.
25. Cannon.
26. Hanney : "History of Economic thought, p-275.
27. Gile and Rist.
28. Seligman.
29. Prof Gyan Chand.
30. Malthus : " Essay on populatio, Book IV, Vol. II, p-170.
31. H. Villard : "Economic Development", pt IV, Chap. 16, Role of Population 1963.
32. Hanney : "History of Economic thought", p-78.
33. Malthus : "Essay on population, Book IV, Vol. II, p-170.
34. Ibid. p-79.
35. Shorter oxford english dictionary, 1903.
36. Malthus, Ibid., p-172.
37. Gide and Rist.

*****